डॉ॰पद्मा पाटील
एम॰ए॰,एम॰फिल॰,पीएच॰डी॰
प्रोफेसर एवं अध्यक्षा,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि **श्री॰उमाजी सुभाष पाटील** का एम्॰फिल्॰ (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत **"डॉ॰राज बुद्धिराजा के 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ"** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 21/07/2009

(डॉ॰पद्मा पाटील)
प्रोफेसर एवं अध्यक्षा,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ॰जुल्फिकारबानू मख्तुम देशाई
एम॰ए॰ (हिंदी), एम॰ए॰ (मराठी),
डी॰ एच॰ ई॰,पीएच॰डी॰
भूतपूर्व अध्यक्षा,
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद महाविद्यालय, सांगली।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री॰उमाजी सुभाष पाटील** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्॰फिल्॰ (हिंदी) उपाधि के लिए **"डॉ॰राज बुद्धिराजा के 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ"** लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। इस शोध कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पालन किया है। इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए तथ्य मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट होकर ही इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करती हूँ। यह शोध कार्य इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय में एम्॰फिल्॰ उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 20 JUL 2009

शोध निर्देशिका

(डॉ॰जुल्फिकारबानू मख्तुम देशाई)

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि "डॉ॰राज बुद्धिराजा के 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ" लघु शोध-प्रबंध मेरा अपना मौलिक शोध कार्य है, जिसे एम्॰फिल॰ (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। यह शोध कार्य इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय में एम्॰ फिल्॰ उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 20 JUL 2009

शोध-छात्र

उसुपाटील

(श्री॰उमाजी सुभाष पाटील)

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

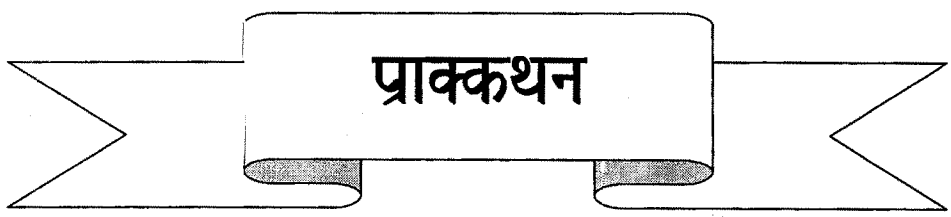

प्राक्कथन

प्राक्कथन

डॉ॰ राज बुद्धिराजा का हिंदी साहित्य में अनमोल योगदान रहा है। जापानी सर्वोच्च नागरी पुरस्कार प्राप्त डॉ॰ बुद्धिराजा साठोत्तरी हिंदी उपन्यासकारों में अपना विशेष स्थान रखती हैं। उनके उपन्यासों में विविध समस्याओं को मुखर वाणी प्रदान की गई हैं। उन्हीं उपन्यासों में से एक उपन्यास है - 'कावेरी'।

20 वीं शताब्दी के 6 वें दशक के बाद अनेक महिलाओं ने लेखन कार्य में अपना योगदान दिया। उन महिलाओं ने समाज का विविधांगी चित्रण कर समाज की वास्तविकता को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया। इससे पहले भी कई साहित्यकारों ने समाज-यथार्थ को प्रस्तुत किया है, इसमें दो राय नहीं है, पर नारी-जीवन के यथार्थ एवं नारी की दृष्टि से समाज-यथार्थ को प्रस्तुत करने में वे साहित्यकार सफलता प्राप्त न कर सके, क्योंकि वे नारी को पुरूष के दृष्टिकोण से देखते रहे है। नारी-जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिए वे कल्पना का ही सहारा लेते थे। 1960 के पूर्वकाल में अधिकतर मात्रा में पुरूष साहित्यकार लेखन कार्य में जुटे थे। लेकिन 1960 के बाद इस स्थिती में परिवर्तन आ गया और महिलाएँ भी धड़ल्ले से लेखन कार्य में जुट गयी।

साहित्य की विविध विधाओं में महिलाएँ लेखन करने लगी। उसी तरह वे उपन्यास विधा में भी कार्यरत रही। इन साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों ने नारी-जीवन की वास्तविकता को बेहिचक नारी के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। साथ ही उन्होंने समाज की हर इकाइयों, घटनाओं, परिस्थितियों को अपने दृष्टिकोण से अभिव्यंजित किया उन्होंने नारी-जीवन की अनछुई परतों को संस्पर्श करते हुए अन्य विषयों के प्रति भी अपना उत्तरदायित्व निभाया। उन्हीं साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों में से एक डॉ॰ राज बुद्धिराजा ने अपने उपन्यासों में समाज का विविधांगी चित्रण करते हुए विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया। उनके उपन्यासों में रचनाक्रम की दृष्टि से द्वितीय उपन्यास है - 'कावेरी'।

इस उपन्यास में समाज-जीवन से संबंधित विभिन्न समस्याओं को प्रस्तुत किया है। यह समस्याएँ मुझे उद्‌विग्न करने के साथ ही सोचने के लिए झकझोती रही।

जब मुझे एम॰ फिल्‌॰ करने का अवसर मिला, तो मैंने सर्वप्रथम 'कावेरी' उपन्यास के संदर्भ में सोचा। गुरूवर्या डॉ॰ जुल्फिकाबानू देसाई जी से चर्चा के बाद और उनकी संमती से उक्त विषय का मैंने चयन किया। इस विषय के चयन के पीछे उद्‌देश्य यही था कि एक महिला उपन्यासकार ने नायिका-प्रधान उपन्यास में नारी के दृष्टिकोण से मनुष्य जीवन की किन-किन समस्याओं को चित्रांकित किया है ? इनका अन्वेषण करते हुए उसकी सफलता को भी जाँचना रहा हैं। इसी कारण मैंने एम॰ फिल्‌॰ की उपाधि हेतु "डॉ॰ राज बुद्‌धिराजा के 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ" इस विषय को चुना है।

अनुसंधान के आरंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न हुए थे -

1. डॉ॰ राज बुद्‌धिराजा का व्यक्तित्व एंव कृतित्व कैसा है ?
2. डॉ॰ राज बुद्‌धिराजा के समकालीन महिला उपन्यासकार कौन-कौन है ?
   तथा उनमें डॉ॰ राज बुद्‌धिराजा का स्थान क्या है ?
3. डॉ॰ राज बुद्‌धिराजा की उपन्यास-कृतियाँ कितनी है ?
4. समस्या का अर्थ क्या है ? समस्या कितने प्रकार की होती है ?
5. डॉ॰ राज बुद्‌धिराजा ने 'कावेरी' उपन्यास में किन-किन समस्याओं को उठाया गया है ? तथा उसमें उनको सफलता मिली हैं या नहीं ?

उपर्युक्त सभी प्रश्नों के उत्तर मैंने लघु-शोध प्रवंध में प्रस्तुत करने का यथाशक्ति प्रयास किया हैं। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने उक्त लघु-शोध प्रवंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजन कर विवेच्य विषय का अध्ययन एवं विवेचन प्रस्तुत किया हैं -

प्रथम अध्याय : समकालीन महिला उपन्यासकार और डॉ॰ राज बुद्‌धिराजा

इस अध्याय में डॉ॰ राज बुद्‌धिराजा के व्यक्तित्व, कृतित्व, मान-सम्मान आदि का परिचय दिया हैं। समकालीन महिला उपन्यासकारों की कृतियों का परिचय देने के वाद

डॉ० राज बुद्धिराजा का उनकी समकालीन महिला उपन्यासकारों के साथ तुलना करते हुए स्थान निर्धारण किया है। तत्पश्चात् निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय : समस्या : संकल्पना एवं स्वरूप विवेचन

इस अध्याय के अंतर्गत 'समस्या' का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा, प्रकार आदि का विवेचन किया गया है। विभिन्न आधारों पर समस्या के भेद-उपभेद प्रस्तुत किये हैं। समस्या और साहित्य के अंत: संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। समस्या-विधान साहित्य के अंत: संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। समस्या-प्रधान साहित्य के महत्व को अंकित किया गया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

तृतीय अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

इस अध्याय में 'परिवार' शब्द का अर्थ, स्वरूप जानने के बाद परिवार के प्रकारों को अंकित किया है। 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक विघटन की समस्या, टूटते दांपत्य जीवन की समस्या आदि विभिन्न पारिवारिक समस्याओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया है।

चतुर्थ अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित नारी-जीवन की समस्याएँ

इस अध्याय के अंतर्गत 'नारी' शब्द का अर्थ, परिभाषा, नारी के विभिन्न रूप, नारी की युगप्त् स्थिति का विवेचन किया है। इसके बाद 'कावेरी' उप्न्यास में चित्रित अकेलेपन की समस्या, पराधिन्ता की समस्या, कामकाजी नारी की समस्या आदि नारी समस्याओं का सूक्ष्म विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित अन्य समस्याएँ

इस में पारिवारिक और नारी-जीवन की समस्याओं को छोड़कर 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित अन्य समस्याओं का विवेचन किया है। इस अध्याय में अंकित समस्याएँ गौण होने पर भी उनका अपना महत्व हैं। गौण समस्याओं के अध्ययनोपरांत निष्कर्ष रखा है।

इस तरह पाँचों अध्यायों का विवेचन-विश्लेषण किया है और इससे प्राप्त निष्कर्ष उपसंहार में प्रस्तुत किये हैं। अनुसंधान के वाद प्राप्त उपलब्धियों और अनुसंधान की नई दिशाओं का निर्देश उपसंहार में ही प्रस्तुत किया है। तदोपरांत परिशिष्ट और संदर्भ-ग्रंथ सूची दी गई है।

ऋण-निर्देश

शोध-कार्य संपन्न करने के लिए मुझे अनेक ज्ञात-अज्ञात सज्जनों और देवियों से सहायता एवं आशीर्वाद मिलता रहा है अत: उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना मेरा परम कर्तव्य बनता है।

मेरा हृदय सर्वप्रथम आदरणीय मातृतुल्य गुरूवर्या डॉ॰श्रीमती जुल्फिकारबानू देसाई जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता है, जिनके अनमोल मार्गदर्शन में मैं स्वयं का शोध-कार्य पूरा कर सका। गुरू एवं शुभ-चिंतक के रूप में हमेशा आपने मुझे प्रोत्साहित, प्रेरित करने के साथ-साथ मेरी समस्याओं, बाधाओं को हल किया है। आपके आत्मीयतापूर्ण स्नेहल स्वभाव के कारण मुझे शोध-कार्य संपन्न करने में प्रेरणा मिलती रही। आपके परिवार द्वारा सहयोग मिलता रहा है, जिसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। मैं गुरूवर्या डॉ॰ देसाई जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आशीर्वाद की सदैव आकांक्षा करता रहूँगा।

मेरे पिता-सुभाष पाटील, माता-आक्काबाई पाटील, चाचा-शंकर पाटील, चाची-शारदा पाटील, चचेरा भाई-रोहित, चचेरी बहन-अमृता, बहन अलका और बहनोई रमेश सुर्वे, भांजे- रितेश, भांजी-रिया इन सबके आशीर्वाद अथवा शुभाकांक्षाओं के कारण मेरा शोध-कार्य विनाअवरोध के संपन्न हो रहा है। मेरे माता-पिता और परिवार से अर्थादि के रूप में जो सहयोग मिला उसके लिए मैं ऋणी हूँ। मेरी बुआ-शोभा एवं मामा शिवाजी पाटील के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनसे मुझे प्रेरणा मिलती रही।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी विभाग की अध्यक्षा एवं गुरूवर्या प्रो॰ डॉ॰ पद्मा पाटील जी, प्रो॰ अर्जुन चव्हाण जी, शोभा निंबाळकर जी से समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा है। प्रा॰ महादेव मोरे जी से मुझे प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन मिलता रहा है। डॉ॰ वुद्धिराजा जी मुझे 'कावेरी' पर शोध-कार्य करने की अनुमति देते हुए पत्राचारद्वारा मार्गदर्शन करती रही है। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के कर्मचारियों द्वारा जो सहायता मिलती रही है, उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ।

इनके अतिरिक्त मानसिंग पाटील, फत्तेसिंग पाटील, प्रथमेश आडविलकर, सागर कांवळे, अर्जुन कांवळे, नितीन गायकवाड, वंडू डोंवाळे, विलास जगताप, सुशांत जगताप, कृष्णात जगताप, शिवाजी जगताप, मारूती जगताप, निवास जगपात, संदीप लाड, असीफ जमादार, राहुल जगताप, विष्णु सुर्वे, विजय सुर्वे, विश्वजीत सुर्वे, उमेश भोपळे, प्रा॰ कृष्णात पाटील आदि ने मुझे अनमोल सहायता प्रदान की और प्रोत्साहित भी किया। प्रस्तुत शोध-कार्य का सुचारू रूप से टंकन करनेवाले 'अविज् कंम्प्युटर्स' के अविनाश कांबळे तथा उनके सहयोगियों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

अंतत: मैं शोध-कार्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रीति से अनमोल सहायता प्रदान करनेवाले, जिनके पुस्तकों का संदर्भ ग्रंथ के रूप में मैंने उपयोग किया हैं उन लेखक, लेखिकाओं तथा ज्ञात-अज्ञात सज्जनों एवं देवियों के प्रति सहृदय कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और उनके शुभ आशीर्वाद-सदिच्छाओं के साथ इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वानों के समक्ष परीक्षणार्थ अत्यंत विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत करता हूँ।

अनुक्रमणिका

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : समकालीन महिला उपन्यासकार और डॉ॰राज बुद्धिराजा **1 - 68**

1.1	**व्यक्ति परिचय**
1.1.1	जन्म तिथि तथा जन्म स्थान
1.1.2	पिता
1.1.3	माता
1.1.4	बचपन
1.1.5	संस्कार
1.1.6	शिक्षा
1.1.7	वैवाहिक जीवन
1.1.8	रहन-सहन तथा खान-पान
1.1.9	नौकरी
1.2.	**व्यक्तित्व की विशेषताएँ / पहलू**
1.2.1	विनयशीलता
1.2.2	आत्मीयता
1.2.3	प्रसन्नचित्त और उत्साही
1.2.4	अतिथिप्रियता
1.2.5	कर्तव्यनिष्ठ
1.2.6	प्रकृति-प्रिय
1.2.7	स्नेहिल और ममतामयी सखी
1.2.8	आध्यात्मिक दृष्टिकोण

1.2.9 सादगी

1.2.10 संघर्षशील

1.2.11 कर्मण्यशील / कर्मठ तथा स्वाभिमानी

1.2.12 अंत:करण की उदारता

1.2.13 ममतामयी तथा विद्यार्थीप्रिय अध्यापिका

1.2.14 वहुभाषिज्ञ

1.2.15 संगीत तथा नाटक प्रेमी

1.2.16 प्रतिभा संपन्न साहित्यकार

1.2.17 सांस्कृतिक एकता की हिमायती

1.3 कृतित्व

1.4 मान-सम्मान एवं पुरस्कार

1.5 डॉ॰राज बुद्धिराजा के औपन्यासिक कृतियों का सामान्य परिचय

1.5.1 प्रश्नातीत

1.5.2 कावेरी

1.5.3 कन्यादान

1.5.4 हर साल की तरह

1.5.5 रेत का टीला

1.5.6 शंखनाद

1.6 डॉ॰राज बुद्धिराज़ा के समकालीन महिला उपन्यासकार

1.6.1 मन्नू भंडारी

1.6.2 मेहरून्निसा परवेज

1.6.3 मृदुला गर्ग

1.6.4 मंजुल भगत

1.6.5 शशिप्रभा शास्त्री

1.6.6 शिवानी

1.6.7 कुसुम अंसल

1.6.8 सुश्री कृष्णा सोबती

1.6.9 नासिरा शर्मा

1.6.10 प्रभा खेतान

1.6.11 मैत्रेयी पुष्पा

1.6.12 सूर्यबाला

1.6.13 दिनेशनंदिनी डालमिया

1.6.14 दीप्ति खंडेलवाल

1.6.15 निरूपमा सेवती

1.6.16 चंद्रकांता

1.6.17 क्रांति त्रिवेदी

1.6.18 मालती परूलकर

1.6.19 मीनाक्षी पुरी

1.6.20 सुनीता जैन

1.6.21 मृणाल पांडे

1.6.22 प्रतिमा वर्मा

1.6.23 सिम्मी हर्षिता

1.6.24 प्रभा सक्सेना

1.6.25 मालती जोशी

1.6.26 नमिता सिंह

1.6.27 राजी सेठ

1.6.28 अनामिका

1.6.29 डॉ॰सुधा श्रीवास्तव

1.6.30 संतोष शैलजा

1.6.31 स्वर्ण मलहोत्रा

1.6.32 चित्रा मुद्गल

1.6.33 ऋता शुक्ल

1.6.34 गीतांजलि श्री

1.6.35 बिंदु सिन्हा

1.7 समकालीन महिला उपन्यासकारों में डॉ॰राज बुद्धिराजा का स्थान

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : समस्या : संकल्पना एवं स्वरूप विवेचन 69 - 114

प्रस्तावना :

2.1 'समस्या' शब्द से तात्पर्य / अभिप्राय

2.2 समस्या की परिभाषा

2.3 समस्या स्वरूप एवं व्याप्ति

2.4 समस्या के प्रकार

2.4.1 सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक-आर्थिक-धार्मिक के आधार पर

2.4.1.1 सामाजिक समस्या

2.4.1.2 सांस्कृतिक समस्या

2.4.1.3 राजनीतिक समस्या

2.4.1.4 आर्थिक समस्या

2.4.1.5 धार्मिक समस्या

2.4.2 आध्यात्मिक-भौतिक के आधार पर

2.4.2.1 आध्यात्मिक समस्या

2.4.2.2 भौतिक समस्या

2.4.3 उद्‌भव के आधार पर

2.4.3.1 प्राकृतिक अथवा प्रकृतोद्‌भावित समस्या

2.4.3.2 मानवनिर्मित अथवा समाजोद्‌भावित समस्या

2.4.4 अंतरंग-बहिरंग के आधार पर

2.4.4.1 अंतरंग समस्या अथवा आंतरिक समस्या

2.4.4.2 बहिरंग समस्या अथवा बाह्य समस्या

2.4.5 क्षेत्र-नामकरण के आधार पर

2.5 समस्या और साहित्य का पारस्परिक संबंध

2.6 समस्या-प्रधान साहित्य का महत्व

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ 115 - 158

प्रस्तावना :

3.1 परिवार की संकल्पना

3.1.1 परिवार से अभिप्राय

3.1.2 परिवार की परिभाषा

3.1.3 परिवार के प्रकार

3.1.4 पारिवारवाद

3.2 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

3.2.1 पारिवारिक विघटन की समस्या

3.2.2 घरेलू कामकाज की समस्या

3.2.3 कामचोर पति की समस्या

3.2.4 दांपत्य-प्रेम के अभाव की समस्या

3.2.5 बच्चों के नामकरण की समस्या

3.2.6 शिष्टाचार की समस्या

3.2.7 पति-पत्नी के झगडे की समस्या

3.2.8 शरारती बच्चों की समस्या

3.2.9 घर बनाने की समस्या

3.2.10 बच्चों के शिक्षा की समस्या

3.2.11 परिवार के प्रति समर्पित पत्नी की समस्या

3.2.12 टूटते दांपत्य-जीवन की समस्या

3.2.13 पारिवारिक जिम्मेदारी की समस्या

3.2.14 पिता के प्रेम से वंचित बच्चों की समस्या

3.2.15 माता-पुत्री संबंधों के दूरियों की समस्या

3.2.16 माता-पुत्र संबंधों की समस्या

3.2.17 परिवार में पत्नी एवं लडकी के हेय स्थान की समस्या

3.2.18 बच्चों पर अत्यधिक नियंत्रण की समस्या

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित नारी-जीवन की समस्याएँ

159 - 196

प्रस्तावना :

4.1 नारी की संकल्पना

4.1.1 नारी से तात्पर्य

4.1.2 नारी की परिभाषा

4.1.3 नारी के विभिन्न रूप

4.1.4 नारी की युगपत् स्थिति

4.2 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित नारी-जीवन की समस्याएँ

4.2.1 परित्यक्ता नारी की समस्या

4.2.2 अकेलेपन की समस्या

4.2.3 प्रेम-विवाह एवं पुनर्विवाह की समस्या

4.2.4 कामकाजी नारी की समस्या

4.2.5 पराश्रिता या परनिर्भरता की समस्या

4.2.6 बदनामी एवं चारित्रिक पतन की समस्या

4.2.7 अज्ञान और अशिक्षा से पीडित नारी

4.2.8 अर्थार्जन का साधन नारी

4.2.9 प्रेम से वंचित नारी की समस्या

4.2.10 चिंताग्रस्त नारी की समस्या

4.2.11 पति से पीडित नारी की समस्या

4.2.12 यौन-संबंधों की समस्या

4.2.13 विद्रोही एवं दबंग बनती नारी की समस्या

4.2.14 घुटन एवं छटपटाहट की समस्या

निष्कर्ष

पंचम् अध्याय : 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित अन्य समस्याएँ 197 - 216

प्रस्तावना :

5.1 वृद्धों की समस्या

5.2 दहेज-प्रथा की समस्या

5.3 महँगाई की समस्या

5.4 साहित्य लेखन की समस्या

5.5 अंध-विश्वास की समस्या

5.6 मद्यपान की समस्या

5.7 मूल्यहीनता की समस्या

5.8 फोन की समस्या

5.9 देश-विभाजन की समस्या

5.10 स्वार्थांधता की समस्या

5.11 आर्थिक तंगी की समस्या

5.12 मित्रता निभाने की समस्या

5.13 आधुनिक रहन-सहन की समस्या

5.14 विवाह-विच्छेद की समस्या

5.15 अनमेल विवाह की समस्या

निष्कर्ष

उपसंहार **217 - 226**

संदर्भ ग्रंथ सूची **227 - 236**

अ) आधार ग्रंथ

आ) समीक्षात्मक एवं सहाय्यक ग्रंथ

इ) कोश

इ) पत्र-पत्रिकाएँ

उ) अप्रकाशित शोध-प्रबंध

परिशिष्ट